श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

दुर्गा स्तुति नव स्तोत्रावली

सीता जी कृत गौरी वंदना

जय जय गिरिबरराज किसोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी॥

जय गजबदन षडानन माता। जगत् जननि दामिनि दुति गाता॥

भावार्थ- हे श्रेष्ठ पर्वतों के राजा हिमाचल की पुत्री पार्वती! आपकी जय हो, जय हो, हे महादेव के मुखरूपी चंद्रमा की (ओर टकटकी लगाकर देखनेवाली) चकोरी! आपकी जय हो, हे हाथी के मुखवाले गणेश और छह मुखवाले स्वामिकार्तिक की माता! हे जगज्जननी! हे बिजली की-सी कांतियुक्त शरीरवाली! आपकी जय हो!

नहिं तव आदि मध्य अवसाना। अमित प्रभाउ बेदु नहिं जाना॥

भव भव बिभव पराभव कारिनि। बिस्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि॥

भावार्थ- आपका न आदि है, न मध्य है और न अंत है। आपके असीम प्रभाव को वेद भी नहीं जानते। आप संसार को उत्पन्न, पालन और नाश करने वाली हैं। विश्व को मोहित करने वाली और स्वतंत्र रूप से विहार करने वाली हैं।

पतिदेवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख।

महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष॥ 235॥

भावार्थ- पति को इष्टदेव माननेवाली श्रेष्ठ नारियों में हे माता! आपकी प्रथम गणना है। आपकी अपार महिमा को हजारों सरस्वती और शेष भी नहीं कह सकते॥ 235॥

सेवत तोहि सुलभ फल चारी। बरदायनी पुरारि पिआरी॥

देबि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे॥

भावार्थ- हे (भक्तों को मुँहमाँगा) वर देनेवाली! हे त्रिपुर के शत्रु शिव की प्रिय पत्नी! आपकी सेवा करने से चारों फल सुलभ हो जाते हैं। हे देवी! आपके चरण कमलों की पूजा करके देवता, मनुष्य और मुनि सभी सुखी हो जाते हैं।

मोर मनोरथु जानहु नीकें। बसहु सदा उर पुर सबही कें॥
कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं। अस कहि चरन गहे बैदेहीं॥

भावार्थ- मेरे मनोरथ को आप भली-भाँति जानती हैं; क्योंकि आप सदा सबके हृदयरूपी नगरी में निवास करती हैं। इसी कारण मैंने उसको प्रकट नहीं किया। ऐसा कहकर जानकी ने उनके चरण पकड़ लिए।

बिनय प्रेम बस भई भवानी। खसी माल मूरति मुसुकानी॥
सादर सियँ प्रसादु सिर धरेऊ। बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ॥

भावार्थ- गिरिजा सीता के विनय और प्रेम के वश में हो गईं। उन (के गले) की माला खिसक पड़ी और मूर्ति मुसकराई। सीता ने आदरपूर्वक उस प्रसाद (माला) को सिर पर धारण किया। गौरी का हृदय हर्ष से भर गया और वे बोलीं -

सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी॥
नारद बचन सदा सुचि साचा। सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा॥

भावार्थ- हे सीता! हमारी सच्ची आसीस सुनो, तुम्हारी मनःकामना पूरी होगी। नारद का वचन सदा पवित्र (संशय, भ्रम आदि दोषों से रहित) और सत्य है। जिसमें तुम्हारा मन अनुरक्त हो गया है, वही वर तुमको मिलेगा।

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥

भावार्थ- जिसमें तुम्हारा मन अनुरक्त हो गया है, वही स्वभाव से ही सुंदर साँवला वर (राम) तुमको मिलेगा। वह दया का खजाना और सुजान (सर्वज्ञ) है, तुम्हारे शील और स्नेह को जानता है। इस

प्रकार गौरी का आशीर्वाद सुनकर जानकी समेत सब सखियाँ हृदय में हर्षित हुईं। तुलसीदास कहते हैं - भवानी को बार-बार पूजकर सीता प्रसन्न मन से राजमहल को लौट चलीं।

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।

मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥ 236॥

भावार्थ- गौरी को अनुकूल जान कर सीता के हृदय को जो हर्ष हुआ,वह कहा नहीं जा सकता।सुंदर मंगलों के मूल उनके बाएँ अंग फड़क ने लगे॥ 236॥

भवानी अष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता,

न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता ।

न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव

गतिस्त्वं(ङ्) गतिस्त्वं(न्) त्वमेका भवानि ॥1॥

भवाब्धावपारे महादुःखभीरु

पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः ।

कुसंसारपाशप्रबद्धः(स्) सदाहं(ङ्)

गतिस्त्वं(ङ्) गतिस्त्वं(न्) त्वमेका भवानि ॥2॥

न जानामि दानं(न्) न च ध्यानयोगं(न्)

न जानामि तन्त्रं(न्) न च स्तोत्रमन्त्रम् ।

न जानामि पूजां(न्) न च न्यासयोगं(ङ्)

गतिस्त्वं(ङ्) गतिस्त्वं(न्) त्वमेका भवानि ॥3॥

न जानामि पुण्यं(न्) न जानामि तीर्थ

न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित् ।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातर्
गतिस्त्वं(ङ्)गतिस्त्वं(न्) त्वमेका भवानि ॥4॥

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः(ख्) कुदासः(ख्)
कुलाचारहीनः(ख्) कदाचारलीनः ।
कुदृष्टिः(ख्) कुवाक्यप्रबन्धः(स्) सदाहं(ङ्)
गतिस्त्वं(ङ्) गतिस्त्वं(न्) त्वमेका भवानि ॥5॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं(न्)
दिनेशं(न्) निशीथेश्वरं वा कदाचित् ।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये
गतिस्त्वं(ङ्) गतिस्त्वं(न्) त्वमेका भवानि ॥6॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये ।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं(ङ्) गतिस्त्वं(न्) त्वमेका भवानि ॥7॥

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः(स्) सदा जाड्यवक्त्रः ।
विपत्तौ प्रविष्टः(फ्) प्रनष्टः(स्) सदाहं(ङ्)
गतिस्त्वं(ङ्) गतिस्त्वं(न्) त्वमेका भवानि ॥8॥

महिषासुर मर्दिनी

अयि गिरिनन्दिनि नंदितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते
गिरिवर विंध्य शिरोऽधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुंबिनि भूरि कुटुंबिनि भूरि कृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते॥1॥

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते।
दनुज निरोषिणि दितिसुत रोषिणि दुर्मद शोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते॥2॥

अयि जगदंब मदंब कदंब वनप्रिय वासिनि हासरते
शिखरि शिरोमणि तुङ्ग हिमालय श्रृंग निजालय मध्यगते।
मधु मधुरे मधु कैटभ गंजिनि कैटभ भंजिनि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते॥3॥

अयि शतखण्ड विखण्डित रुण्ड वितुण्डित शुण्ड गजाधिपते
रिपु गज गण्ड विदारण चण्ड पराक्रम शुण्ड मृगाधिपते।
निज भुज दण्ड निपातित खण्ड विपातित मुण्ड भटाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥4॥

अयि रण दुर्मद शत्रु वधोदित दुर्धर निर्जर शक्तिभृते
चतुर विचार धुरीण महाशिव दूतकृत प्रमथाधिपते।

दुरित दुरीह दुराशय दुर्मति दानव दूत कृतांतमते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥5॥

अयि शरणागत वैरि वधूवर वीर वराभय दायकरे
त्रिभुवन मस्तक शूल विरोधि शिरोधि कृतामल शूलकरे।
दुमिदुमि तामर दुंदुभिनाद महो मुखरीकृत तिग्मकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥6॥

अयि निज हुँकृति मात्र निराकृत धूम्र विलोचन धूम्र शते
समर विशोषित शोणित बीज समुद्भव शोणित बीज लते।
शिव शिव शुंभ निशुंभ महाहव तर्पित भूत पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥7॥

धनुरनु संग रणक्षणसंग परिस्फुर दंग नटत्कटके
कनक पिशंग पृषत्क निषंग रसद्भट शृंग हतावटुके।
कृत चतुरंग बलक्षिति रंग घटद्बहुरंग रटद्बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥8॥

सुरललना ततथेयि तथेयि कृताभिनयोदर नृत्यरते
कृत कुकुथः(ख्) कुकुथो गडदादिकताल कुतूहल गानरते ।
धुधुकुट धुक्कुट धिंधिमित ध्वनि धीर मृदङ्ग निनादरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 9 ॥

जय जय जप्य जयेजय शब्द परस्तुति तत्पर विश्वनुते
झण झण झिञ्झिमि झिंकृत नूपुर सिंजित मोहित भूतपते।
नटित नटार्ध नटी नट नायक नाटित नाट्य सुगानरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥10॥

अयि सुमनः(स्) सुमनः(स्) सुमनः(स्) सुमनः(स्) सुमनोहर कांतियुते
श्रितरजनी रजनीरजनी रजनीरजनी कर वक्त्रवृते।
सुनयन विभ्रमर भ्रमर भ्रमरभ्रमर भ्रमराधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥11॥

सहित महाहव मल्लम तल्लिक मल्लित रल्लक मल्लरते
विरचित वल्लिक पल्लिक मल्लिक झिल्लिक भिल्लिक वर्ग वृते।
सितकृत पुल्लिसमुल्ल सितारुण तल्लज पल्लव सल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥12॥

अविरल गण्ड गलन्मद मेदुर मत्त मतङ्गज राजपते
त्रिभुवन भूषण भूत कलानिधि रूप पयोनिधि राजसुते।
अयि सुद तीजन लालसमानस मोहन मन्मथ राजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥13॥

कमल दलामल कोमल कांति कलाकलितामल भाललते
सकल विलास कलानिलयक्रम केलि चलत्कल हंस कुले।

अलिकुल सङ्कुल कुवलय मण्डल मौलिमिलद्बकुलालि कुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥14॥

कर मुरली रव वीजित कूजित लज्जित कोकिल मंजुमते
मिलित पुलिन्द मनोहर गुंजित रंजितशैल निकुंज गते।
निजगुण भूत महाशबरीगण सद्गुण संभृत केलितले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥15॥

कटितटपीत दुकूलविचित्र मयूखतिरस्कृत चन्द्ररुचे
प्रणतसुरासुर मौलिमणिस्फुर दंशुलसन्नख चन्द्ररुचे
जितकनकाचल मौलिपदोर्जित निर्भरकुञ्जर कुम्भकुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥16 ॥

विजित सहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते
कृत सुरतारक संगरतारक संगरतारक सूनुसुते।
सुरथ समाधि समान समाधि समाधि समाधि सुजातरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥17॥

पदकमलं(ङ्) करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं स शिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः(स्) स कथं(न्) न भवेत्।
तव पदमेव परंपदमित्यनुशीलयतो मम किं(न्) न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥18॥

कनकल सत्कल सिन्धु जलैरनु सिंचिनुते गुण रंगभुवम्
भजति स किं(न्) न शचीकुच कुंभ तटी परिरंभ सुखानुभवम्।
तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवं
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥19॥

तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं(न्) ननु कूलयते
किमु पुरुहूत पुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥20॥

अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथानुमितासिरते।
यदुचितमत्र भवत्युररी कुरुतादुरुतापमपा कुरुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥21॥

देवी कवच स्तोत्र

॥अथ श्री देव्याः कवचम्॥

ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ॥
ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। चामुण्डा देवता ।
अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम्। दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम् ।
श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ॥
॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

मार्कण्डेय उवाच ।
ॐ यद्गुह्यं परमं लोके, सर्वरक्षाकरं(न्) नृणाम्।

यन्न कस्यचिदाख्यातं(न्), तन्मे ब्रूहि पितामह॥1॥

ब्रह्मोवाच ।
अस्ति गुह्यतमं विप्र, सर्वभूतोपकारकम्।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं(न्), तच्छृणुष्व महामुने॥2॥

प्रथमं शैलपुत्री च, द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं(ञ्) चन्द्रघण्टेति, कूष्माण्डेति चतुर्थकम्॥3॥

पंचमं स्कन्दमातेति, षष्ठं(ङ्) कात्यायनीति च।
सप्तमं(ङ्) कालरात्रीति, महागौरीति चाष्टमम्॥4॥

नवमं सिद्धिदात्री च, नवदुर्गाः(फ्) प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि, ब्रह्मणैव महात्मना॥5॥

अग्निना दह्यमानस्तु, शत्रुमध्ये गतो रणे।
विषमे दुर्गमे चैव, भयार्त्ताः(श्) शरणं(ङ्) गताः॥6॥

न तेषां(ञ्) जायते किंचि-दशुभं रणसंकटे।
नापदं(न्) तस्य पश्यामि, शोकदुःखभयं(न्) न हि॥7॥

यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं(न्), तेषां वृद्धिः(फ्) प्रजायते।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि, रक्षसे तान्न संशयः॥8॥

प्रेतसंस्था तु चामुण्डा, वाराही महिषासना।
ऐन्द्री गजसमारूढा, वैष्णवी गरुडासना॥9॥

माहेश्वरी वृषारूढा, कौमारी शिखिवाहना।
लक्ष्मी:(फ्) पद्मासना देवी, पद्महस्ता हरिप्रिया॥10॥

श्वेतरूपधरा देवी, ईश्वरी वृषवाहना।
ब्राह्मी हंससमारूढा, सर्वाभरणभूषिता॥ 11॥

इत्येता मातरः(स्) सर्वाः(स्), सर्वयोगसमन्विताः।
नानाभरणशोभाढ्या, नानारत्नोपशोभिताः॥ 12॥

दृश्यन्ते रथमारूढा, देव्यः(ख्) क्रोधसमाकुलाः।
शंखं(ञ्) चक्रं(ङ्) गदां शक्तिं, हलं(ञ्) च मुसलायुधम्॥13॥

खेटकं(न्) तोमरं(ञ्) चैव, परशुं पाशमेव च।
कुन्तायुधं(न्) त्रिशूलं(ञ्) च, शार्ङ्गमायुधमुत्तमम्॥ 14॥

दैत्यानां(न्) देहनाशाय, भक्तानामभयाय च।
धारयन्त्यायुधानीत्थं(न्), देवानां(ञ्) च हिताय वै।।15।।

नमस्तेऽस्तु महारौद्रे, महाघोरपराक्रमे।
महाबले महोत्साहे, महाभयविनाशिनि॥16॥

त्राहि मां(न्) देवि दुष्प्रेक्ष्ये, शत्रूणां भयवर्द्धिनि ।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री, आग्नेय्यामग्निदेवता॥ 17॥

दक्षिणेऽवतु वाराही, नैर्ऋत्यां(ङ्) खड्गधारिणी।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद्, वायव्यां मृगवाहिनी॥ 18॥

उदीच्यां पातु कौमारी, ऐशान्यां शूलधारिणी।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षे-दधस्ताद् वैष्णवी तथा ॥ 19 ॥

एवं(न्) दश दिशो रक्षेच्-चामुण्डा शववाहना।
जया मे चाग्रतः(फ्) पातु, विजया पातु पृष्ठतः॥ 20॥

अजिता वामपार्श्वे तु, दक्षिणे चापराजिता।
शिखामुद्योतिनी रक्षे- दुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता॥21॥

मालाधरी ललाटे च, भ्रुवौ रक्षेद्यशस्विनी ।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये, यमघण्टा च नासिके॥ 22॥

शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये, श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी।
कपोलौ कालिका रक्षेत्-कर्णमूले तु शाङ्करी ॥ 23॥

नासिकायां सुगन्धा च, उत्तरोष्ठे च चर्चिका।
अधरे चामृतकला, जिह्वायां(ञ्) च सरस्वती॥ 24॥

दन्तान् रक्षतु कौमारी, कण्ठदेशे तु चण्डिका।
घण्टिकां(ञ्) चित्रघण्टा च, महामाया च तालुके॥ 25॥
कामाक्षी चिबुकं रक्षेद्, वाचं मे सर्वमंगला।
ग्रीवायां भद्रकाली च, पृष्ठवंशे धनुर्धरी॥ 26॥

नीलग्रीवा बहिः(ख्)कण्ठे, नलिकां(न्) नलकूबरी।
स्कन्धयोः(ख्) खड्गिनी रक्षेद्, बाहू मे वज्रधारिणी॥27॥

हस्तयोर्दण्डिनी रक्षे-दम्बिका चाङ्गुलीषु च।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्-कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी॥28॥

स्तनौ रक्षेन्महादेवी, मनः(श्) शोकविनाशिनी।
हृदये ललिता देवी, उदरे शूलधारिणी॥ 29॥

नाभौ च कामिनी रक्षेद्, गुह्यं(ङ्) गुह्येश्वरी तथा।
पूतना कामिका मेढ्रं(ङ्), गुदे महिषवाहिनी॥30॥

कट्यां भगवती रक्षेज्-जानूनी विन्ध्यवासिनी।
जङ्घे महाबला रक्षेत्-सर्वकामप्रदायिनी॥31॥

गुल्फयोर्नारसिंही च, पादपृष्ठे तु तैजसी।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्- पादाधस्तलवासिनी॥32॥

नखान् दंष्ट्राकराली च, केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी।
रोमकूपेषु कौबेरी, त्वचं वागीश्वरी तथा॥33॥

रक्तमज्जावसामांसान्-यस्थिमेदांसि पार्वती।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च, पित्तं(ञ्) च मुकुटेश्वरी॥ 34 ॥

पद्मावती पद्मकोशे, कफे चूडामणिस्तथा।
ज्वालामुखी नखज्वाला-मभेद्या सर्वसन्धिषु॥35 ॥

शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्-छायां छत्रेश्वरी तथा।
अहंकारं मनो बुद्धिं, रक्षेन्मे धर्मधारिणी ॥ 36 ॥

प्राणापानौ तथा व्यान-मुदानं(ञ्) च समानकम्।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्-प्राणं(ङ्) कल्याणशोभना॥37॥

रसे रूपे च गन्धे च, शब्दे स्पर्शे च योगिनी।
सत्वं रजस्तमश्चैव, रक्षेन्नारायणी सदा॥38॥

आयू रक्षतु वाराही, धर्मं रक्षतु वैष्णवी।
यशः(ख्) कीर्तिं(ञ्) च लक्ष्मीं(ञ्) च, धनं विद्यां(ञ्) च चक्रिणी॥39॥

गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्-पशून्मे रक्ष चण्डिके।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्-भार्यां रक्षतु भैरवी॥40॥

पन्थानं सुपथा रक्षेन्-मार्गं(ङ्) क्षेमकरी तथा।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्-विजया सर्वतः(स्) स्थिता॥ 41॥

रक्षाहीनं(न्) तु यत्स्थानं, वर्जितं(ङ्) कवचेन तु।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि, जयन्ती पापनाशिनी॥ 42॥

पदमेकं(न्) न गच्छेत्तु, यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
कवचेनावृतो नित्यं, यत्र यत्रैव गच्छति॥43॥

तत्र तत्रार्थलाभश्च, विजयः(स्) सर्वकामिकः।
यं यं(ञ्) चिन्तयते कामं(न्), तं(न्) तं प्राप्नोति निश्चितम्।
परमैश्वर्यमतुलं, प्राप्स्यते भूतले पुमान्॥44 ॥

निर्भयो जायते मर्त्यः(स्), संग्रामेष्वपराजितः।
त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः(ख्), कवचेनावृतः(फ्) पुमान्॥45॥

इदं(न्) तु देव्याः(ख्) कवचं(न्), देवानामपि दुर्लभम्।
यः(फ्) पठेत्प्रयतो नित्यं(न्), त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः॥46॥

दैवी कला भवेत्तस्य, त्रैलोक्येष्वपराजितः।
जीवेद् वर्षशतं साग्र- मपमृत्युविवर्जितः॥47॥

नश्यन्ति व्याधयः(स्) सर्वे, लूताविस्फोटकादयः।
स्थावरं(ञ्) जङ्गमं(ञ्) चैव, कृत्रिमं(ञ्) चापि यद्विषम्॥ 48॥

अभिचाराणि सर्वाणि, मन्त्रयन्त्राणि भूतले।
भूचराः(ख्) खेचराश्चैव, जलजाश्चोपदेशिकाः॥49॥

सहजा कुलजा माला, डाकिनी शाकिनी तथा।

अन्तरिक्षचरा घोरा, डाकिन्यश्च महाबलाः॥ 50॥

ग्रहभूतपिशाचाश्च, यक्षगन्धर्वराक्षसाः।
ब्रह्मराक्षसवेतालाः(ख्), कूष्माण्डा भैरवादयः॥ 51॥

नश्यन्ति दर्शनात्तस्य, कवचे हृदि संस्थिते।
मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्- तेजोवृद्धिकरं परम्॥ 52॥

यशसा वर्धते सोऽपि, कीर्तिमण्डितभूतले।
जपेत्सप्तशतीं(ञ्) चण्डीं(ङ्), कृत्वा तु कवचं पुरा॥ 53॥

यावद्भूमण्डलं(न्) धत्ते, सशैलवनकाननम्।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां, सन्ततिः(फ्) पुत्रपौत्रिकी॥54।।

देहान्ते परमं स्थानं, यत्सुरैरपि दुर्लभम्।
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं, महामाया प्रसादतः।
लभते परमं रूपं, शिवेन सह मोदते ॥ 55॥

।। इति देव्याः(ख्) कवचं सम्पूर्णम्।।

देवीस्तोत्रं विष्णुनाकृतम्

श्रीभगवानुवाच
नमो देव्यै प्रकृत्यै च, विधात्र्यै सततं(न्) नमः ।
कल्याणै कामदायै च, वृद्ध्यै सिद्ध्यै नमो नमः ॥ 1॥

सच्चिदानन्दरूपिण्यै, संसारारणये नमः ।
पञ्चकृत्यविधात्र्यै ते, भुवनेश्यै नमो नमः ॥ 2॥

सर्वाधिष्ठानरूपायै, कूटस्थायै नमो नमः ।
अर्धमात्रार्थभूतायै, ह्रल्लेखायै नमो नमः ॥ 3॥

ज्ञातं मयाऽखिलमिदं(न्) त्वयि सन्निविष्टं(न्),
त्वत्तोऽस्य सम्भवलयावपि मातरद्य ।
शक्तिश्च तेऽस्य करणे विततप्रभावा,
ज्ञाताऽधुना सकललोकमयीति नूनम् ॥ 4॥

विस्तार्य सर्वमखिलं(म्) सदसद्विकारं(म्),
सन्दर्शयस्यविकलं पुरुषाय काले ।
तत्त्वैश्च षोडशभिरेव च सप्तभिश्च,
भासीन्द्रजालमिव नः(ख्) किल रञ्जनाय ॥ 5॥

न त्वामृते किमपि वस्तुगतं विभाति,
व्याप्यैव सर्वमखिलं(न्) त्वमवस्थिताऽसि ।
शक्तिं(म्) विना व्यवहृतो पुरुषोऽप्यशक्तो,
बम्भण्यते जननि बुद्धिमता जनेन ॥ 6॥

प्रीणासि विश्वमखिलं सततं प्रभावैः(स्),
स्वैस्तेजसा च सकलं प्रकटीकरोषि ।
अस्त्येव देवि तरसा किल कल्पकाले,
को वेद देवि चरितं(न्) तव वै भवस्य ॥ 7॥

त्राता वयं(ञ्) जननि ते मधुकैटभाभ्यां,
लोकाश्च ते सुविततााः(ख्) खलु दर्शिता वै ।
नीताः(स्) सुखस्य भवने परमां(ञ्) च कोटिं,
यद्दर्शनं(न्) तव भवानि महाप्रभावम् ॥ 8॥

नाहं भवो न च विरिञ्चि विवेद मातः(ख्),
कोऽन्यो हि वेत्ति चरितं(न्) तव दुर्विभाव्यम् ।
कानीह सन्ति भुवनानि महाप्रभावे,
ह्यस्मिन्भवानि रचिते रचनाकलापे ॥ 9॥

अस्माभिरत्र भुवने हरिरन्य एव,
दृष्टः(श्) शिवः(ख्) कमलजः(फ्) प्रथितप्रभावः ।
अन्येषु देवि भुवनेषु न सन्ति किं(न्) ते ,
किं विद्म देवि विततं(न्) तव सुप्रभावम् ॥ 10॥

याचेऽम्ब तेऽङ्घ्रिकमलं प्रणिपत्य कामं(ञ्),
चित्ते सदा वसतु रूपमिदं(न्) तवैतत् ।
नामापि वक्त्रकुहरे सततं(न्) तवैव,
सन्दर्शनं(न्) तव पदाम्बुजयोः(स्) सदैव ॥ 11॥

भृत्योऽयमस्ति सततं मयि भावनीयं(न्),
त्वां स्वामिनीति मनसा ननु चिन्तयामि ।
एषाऽऽवयोरविरता किल देवि भूयाद्-
व्याप्तिः(स्) सदैव जननी सुतयोरिवार्ये ॥12॥

त्वं वेत्सि सर्वमखिलं भुवनप्रपञ्चं,
सर्वज्ञता परिसमाप्तिनितान्तभूमिः ।
किं पामरेण जगदम्ब निवेदनीयं,
यद्युक्तमाचर भवानि तवेङ्गितं स्यात् ॥ 13॥

ब्रह्मा सृजत्यवति विष्णुरुमापतिश्च,
संहारकारक इयं(न्) तु जने प्रसिद्धिः ।

किं सत्यमेतदपि देवि तवेच्छया वै,
कर्तुं(ङ्) क्षमा वयमजे तव शक्तियुक्ताः ॥ 14॥

धात्री धराधरसुते न जगद्बिभर्ति,
आधारशक्तिरखिलं(न्) तव वै बिभर्ति ।
सूर्योऽपि भाति वरदे प्रभया युतस्ते,
त्वं सर्वमेतदखिलं विरजा विभासि ॥ 15॥

ब्रह्माऽहमीश्वरवरः(ख्) किल ते प्रभावात्-
सर्वे वयं(ञ्) जनियुता न यदा तु नित्याः ।
केऽन्ये सुराः(श्) शतमखप्रमुखाश्च नित्या,
नित्या त्वमेव जननी प्रकृतिः(फ्) पुराणा ॥ 16॥

त्वं(ञ्) चेद्भवानि दयसे पुरुषं पुराणं(ञ्),
जानेऽहमद्य तव संनिधिगः(स्) सदैव ।
नोचेदहं विभुरनादिरनीह ईशो,
विश्वात्मधीरिति तमः(फ्) प्रकृतिः(स्) सदैव ॥ 17॥

विद्या त्वमेव ननु बुद्धिमतां(न्) नराणां,
शक्तिस्त्वमेव किल शक्तिमतां सदैव ।
त्वं(ङ्) कीर्तिकान्तिकमलामलतुष्टिरूपा,
मुक्तिप्रदा विरतिरेव मनुष्यलोके ॥ 18॥

गायत्र्यसि प्रथमवेदकला त्वमेव,
स्वाहा स्वधा भगवती सगुणार्धमात्रा ।
आम्नाय एव विहितो निगमो भवत्या,
सञ्जीवनाय सततं सुरपूर्वजानाम् ॥ 19॥

मोक्षार्थमेव रचयस्यखिलं(म्) प्रपञ्चं(न्),
तेषां(ङ्) गताः(ख्) खलु यतो ननु जीवभावम् ।
अंशा अनादिनिधनस्य किलानघस्य,
पूर्णार्णवस्य विततता हि यथा तरङ्गाः ॥ 20॥

जीवो यदा तु परिवेत्ति तवैव कृत्यं(न्),
त्वं संहरस्यखिलमेतदिति प्रसिद्धम् ।
नाट्यं(न्) नटेन रचितं वितथेऽन्तरङ्गे,
कार्ये कृते विरमसे प्रथितप्रभावा ॥ 21॥

त्राता त्वमेव मम मोहमयाद्भवाब्धेस्-
त्वामम्बिके सततमेमि महार्तिदे च ।
रागादिभिर्विरचिते वितथे किलान्ते,
मामेव पाहि बहुदुःखकरे च काले ॥ 22॥

नमो देवि महाविद्ये, नमामि चरणौ तव ।
सदा ज्ञानप्रकाशं मे, देहि सर्वार्थदे शिवे ॥ 23॥

इति श्रीमद्देवीभागवतमहापुराणे तृतीयस्कन्धान्तरगतम्
चतुर्थोऽध्याये विष्णुनाकृतं(न्) देवीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

देव्यपराधक्षमापन

न मन्त्रं(न्) नो यन्त्रं(न्), तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं(न्) ध्यानं(न्), तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ।
न जाने मुद्रास्ते ,तदपि च न जाने विलपनं
परं(ञ्) जाने मातस्-त्वदनुसरणं(ङ्) क्लेशहरणम् ॥1॥

विधेरज्ञानेन, द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्-तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत् क्षन्तव्यं(ञ्), जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत, क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥2॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते, जननि बहवः(स्) सन्ति सरलाः
परं(न्) तेषां मध्ये, विरलतरलोऽहं(न्) तव सुतः ।
मदीयोऽयं(न्) त्यागः(स्), समुचितमिदं(न्) नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥3॥

जगन्मातर्मातस्-तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं(न्) देवि, द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं, मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत, क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥4॥

परित्यक्ता देवा, विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीते-रधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं(ञ्) चेन्मातस्-तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बो-दरजननि कं यामि शरणम् ॥5॥

श्वपाको जल्पाको, भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को, विहरति चिरं(ङ्) कोटिकनकैः ।
तवापर्णे कर्णे, विशति मनुवर्णे फलमिदं(ञ्)
जनः(ख्) को जानीते, जननि जपनीयं(ञ्) जपविधौ ॥6॥

चिताभस्मालेपो, गरलमशनं(न्) दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे, भुजगपतिहारी पशुपतिः ।

कपाली भूतेशो, भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणि-ग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥7॥

न मोक्षस्याकाङ्क्षा,भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा, शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।
अतस्त्वां संयाचे, जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी, शिव शिव भवानीति जपतः ॥8॥

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः,
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे,
धत्से कृपामुचितमम्ब परं(न्) तवैव ॥9॥

आपत्सु मग्नः(स्) स्मरणं(न्) त्वदीयं(ङ्)
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः(ह्),
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥10॥

जगदम्ब विचित्रमत्र किं,
परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।
अपराधपरम्परापरं(न्),
न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥11॥

मत्समः(फ्) पातकी नास्ति, पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
एवं(ञ्) ज्ञात्वा महादेवि, यथायोग्यं(न्) तथा कुरु ॥12॥

अर्गला स्तोत्र

ॐ नमश्चण्डिकायै॥

श्रीचण्डिकाध्यानम्

ॐ बन्धूककुसुमाभासां(म्), पञ्चमुण्डाधिवासिनीम् ।
स्फुरच्चन्द्रकलारत्न- मुकुटां(म्) मुण्डमालिनीम् ॥1॥

त्रिनेत्रां(म्) रक्तवसनां(म्), पीनोन्नतघटस्तनीम् ।
पुस्तकं(ञ्) चाक्षमालां(ञ्) च,
वरं(ञ्) चाभयकं(ङ्) क्रमात् ॥
दधतीं(म्) सं(म्)स्मरेन्नित्य- मुत्तराम्नायमानिताम् ॥2॥

या चण्डी मधुकैटभादिदैत्यदलनी या माहिषोन्मूलिनी,
या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डमथनी, या रक्तबीजाशनी ।
शक्तिः(श्) शुम्भनिशुम्भदैत्यदलनी या सिद्धिदात्री परा,
सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता, मां(म्) पातु विश्वेश्वरी ॥3॥

अथ अर्गलास्तोत्रम्

मार्कण्डेय उवाच

ॐ जयन्ती मङ्गला काली, भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री, स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥1॥

जय त्वं(न्) देवि चामुण्डे, जय भूतार्तिहारिणि।
जय सर्वगते देवि, कालरात्रि नमोऽस्तु ते॥2॥

मधुकैटभविद्रावि- विधातृवरदे नमः।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥3॥

महिषासुरनिर्णाशि, भक्तानां(म्) सुखदे नमः।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥4॥

रक्तबीजवधे देवि, चण्डमुण्डविनाशिनि।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥5॥

शुम्भस्यैव निशुम्भस्य, धूम्राक्षस्य च मर्दिनि।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥6॥

वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि, सर्वसौभाग्यदायिनि।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥7॥

अचिन्त्यरूपचरिते, सर्वशत्रुविनाशिनि।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥8॥

नतेभ्यः(स्) सर्वदा भक्त्या, चण्डिके दुरितापहे।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥9॥

स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं(न्) त्वां(ञ्) , चण्डिके व्याधिनाशिनि।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥10॥

चण्डिके सततं(यँ) ये त्वा- मर्चयन्तीह भक्तितः।

रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥11॥

देहि सौभाग्यमारोग्यं(न्), देहि मे परमं(म्) सुखम्।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥12॥

विधेहि द्विषतां(न्) नाशं(वँ्) , विधेहि बलमुच्चकैः।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥13॥

विधेहि देवि कल्याणं(वँ्), विधेहि परमां(म्) श्रियम्।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥14॥

सुरासुरशिरोरत्न- निघृष्टचरणेऽम्बिके।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥15॥

विद्यावन्तं(यँ्) यशस्वन्तं(लँ्) , लक्ष्मीवन्तं(ञ्) जनं(ङ्) कुरु।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥16॥

प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने ,चण्डिके प्रणताय मे।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥17॥

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्र- सं(म्)स्तुते परमेश्वरि।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥18॥

कृष्णेन सं(म्)स्तुते देवि, शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥19॥

हिमाचलसुतानाथ- सं(म्)स्तुते परमेश्वरि।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥20॥

इन्द्राणीपतिसद्भाव- पूजिते परमेश्वरि।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥21॥

देवि प्रचण्डदोर्दण्ड- दैत्यदर्पविनाशिनि।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥22॥

देवि भक्तजनोद्दाम- दत्तानन्दोदयेऽम्बिके।
रूपं(न्) देहि जयं(न्) देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥23॥

पत्नीं(म्) मनोरमां(न्) देहि, मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं(न्) दुर्गसं(म्)सार- सागरस्य कुलोद्भवाम्॥24॥

इदं(म्) स्तोत्रं(म्) पठित्वा तु, महास्तोत्रं(म्) पठेन्नरः।
स तु सप्तशतीसंख्या- वरमाप्नोति सम्पदाम्॥25॥
॥ इति देव्या अर्गलास्तोत्रं(म्) सम्पूर्णम् ॥

दुर्गनाशनस्तोत्र (श्रीकृष्ण कृत)

श्रीकृष्ण उवाच
त्वमेव सर्वजननी, मूलप्रकृतिरीश्वरी ।
त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ, स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका ॥1॥

कार्यार्थे सगुणा त्वं(ञ्) च, वस्तुतो निर्गुणा स्वयम् ।

परब्रह्मस्वरूपा त्वं(म्), सत्या नित्या सनातनी ॥2॥

तेजः(स्)स्वरूपा परमा, भक्तानुग्रहविग्रहा ।
सर्वस्वरूपा सर्वेशा, सर्वाधारा परात्परा॥3॥

सर्वबीजस्वरूपा च, सर्वपूज्या निराश्रया ।
सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा, सर्वमं(ङ्)गलमं(ङ्)गला ॥4॥

सर्वबुद्धिस्वरूपा च, सर्वशक्तिस्वरूपिणी।
सर्वज्ञानप्रदा देवी, सर्वज्ञा सर्वभाविनी ॥5॥

त्वं(म्) स्वाहा देवदाने च, पितृदाने स्वधा स्वयम् ।
दक्षिणा सर्वदाने च, सर्वशक्तिस्वरूपिणी ॥6॥

निद्रा त्वं(ञ्) च दया त्वं(ञ्) च, तृष्णा त्वं(ञ्) चात्मनः(फ्) प्रिया ।
क्षुत्क्षान्तिः(श्) शान्तिरीशा च, कान्तिः(स्) सृष्टिश्च शाश्वती ॥7॥

श्रद्धा पुष्टिश्च तन्द्रा च, लज्जा शोभा दया तथा।
सतां(म्) सम्पत्स्वरूपा च, विपत्तिरसतामिह ॥8॥

प्रीतिरूपा पुण्यवतां(म्), पापिनां(ङ्) कलहाङ्कुरा ।
शश्वत्कर्ममयी शक्तिः(स्), सर्वदा सर्वजीविनाम् ॥9॥

देवेभ्यः(स्) स्वपदोदात्री, धातुर्धात्री कृपामयी ।
हिताय सर्वदेवानां(म्), सर्वासुरविनाशिनी ॥10॥

योगनिद्रा योगरूपा, योगदात्री च योगिनाम् ।
सिद्धिस्वरूपा सिद्धानां(म्), सिद्धिदा सिद्धयोगिनी ॥11॥

ब्रह्माणी माहेश्वरी च, विष्णुमाया च वैष्णवी ।
भद्रदा भद्रकाली च, सर्वलोकभयङ्करी ॥12॥

ग्रामे ग्रामे ग्रामदेवी, गृहदेवी गृहे गृहे ।
सतां(ङ्) कीर्तिः(फ्) प्रतिष्ठा च, निन्दा त्वमसतां(म्) सदा ॥13॥

महायुद्धे महामारी, दुष्टसं(म्)हाररूपिणी ।
रक्षास्वरूपा शिष्टानां(म्), मातेव हितकारिणी ॥14॥

वन्द्या पूज्या स्तुता त्वं(ञ्) च, ब्रह्मादीनां(ञ्) च सर्वदा ।
ब्राह्मण्यरूपा विप्राणां(न्), तपस्या च तपस्विनाम् ॥15॥

विद्या विद्यावतां(न्) त्वं(ञ्) च, बुद्धिर्बुद्धिमतां(म्) सताम् ।
मेधास्मृतिस्वरूपा च, प्रतिभा प्रतिभावताम् ॥16॥

राज्ञां प्रतापरूपा च, विशां(वँ) वाणिज्यरूपिणी ।
सृष्टौ सृष्टिस्वरूपा त्वं(म्), रक्षारूपा च पालने ॥17॥

तथान्ते त्वं(म्) महामारी, विश्वस्य विश्वपूजिते ।
कालरात्रिर्महारात्रिर्- मोहरात्रिश्च मोहिनी ॥18॥

दुरत्यया मे माया त्वं(यँ), यया सम्मोहितं(ञ्) जगत्।

यया मुग्धो हि विद्वां(म्)श्च, मोक्षमार्गं(न्) न पश्यति॥19॥

इत्यात्मना कृतं(म्) स्तोत्रं(न्), दुर्गाया दुर्गनाशनम् ।
पूजाकाले पठेद्यो हि, सिद्धिर्भवति वाञ्छिता ॥20॥

इति श्रीब्रह्मवैवर्तपुराणे प्रकृतिखंडे श्रीकृष्णकृतं(न्) दुर्गास्तोत्रम् संपूर्णम्।।

श्रीदुर्गापदुद्धारस्तोत्रम्

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे, नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे ।
नमस्ते जगद्वन्द्यपादारविन्दे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥1॥

नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे, नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे ।
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ 2॥

अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य, भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः ।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ 3॥

अरण्ये रणे दारुणे शुत्रुमध्ये- ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ 4॥

अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे, विपत्सागरे मज्जतां(न्) देहभाजाम् ।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतुर्- नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ 5॥

नमश्चण्डिके चण्डदुर्दण्डलीला- समुत्खण्डिताखण्डिताशेषशत्रो।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारबीजं(न्), नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥6॥

त्वमेवाघभावाधृता सत्यवादीर्- न जाता जितक्रोधनात् क्रोधनिष्ठा ।
इडा पिङ्गला त्वं(म्) सुषुम्ना च नाडी, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ 7॥

नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे, सरस्वत्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे ।
विभूतिः(श्) शची कालरात्रिः(स्) सती त्वं(न्), नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ 8॥

शरणमसि सुराणां(म्) सिद्धविद्याधराणां(म्),
मुनिमनुजपशूनां(न्) दस्युभिस्त्रासितानाम् ।
नृपतिगृहगतानां(वँ) व्याधिभिः(फ्) पीडितानां(न्),
त्वमसि शरणमेका देवि दुर्गे प्रसीद ॥ 9॥

इदं(म्) स्तोत्रं(म्) मया प्रोक्त- मापदुद्धारहेतुकम् ।
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं(वँ) वा, पठनाद् घोरसङ्कटात् ॥ 10॥

मुच्यते नात्र सन्देहो , भुवि स्वर्गे रसातले ।
सर्वं(वँ) वा श्लोकमेकं(वँ) वा , यः(फ्) पठेद्भक्तिमान् सदा ॥ 11॥

स सर्वं(न्) दुष्कृतं(न्) त्यक्त्वा, प्राप्नोति परमं(म्) पदम् ।
पठनादस्य देवेशि, किं(न्) न सिद्ध्यति भूतले ॥ 12॥

स्तवराजमिदं(न्) देवि, सङ्क्षेपात्कथितं(म्) मया ॥ 13॥

इति श्रीसिद्धेश्वरीतन्त्रे उमामहेश्वरसं(वँ)वादे श्रीदुर्गापदुद्धारस्तोत्रम् संपूर्णम्।।

ललिता सहस्रनाम स्तोत्रम्

अस्य श्री ललिता सहस्रनाम स्तोत्र माला मन्त्रस्य ।
वशिन्यादिवाग्देवता ऋषयः ।
अनुष्टुप् छन्दः ।
श्रीललितापरमेश्वरी देवता ।
श्रीमद्वाग्भवकूटेति बीजम् ।
मध्यकूटेति शक्तिः ।
शक्तिकूटेति कीलकम् ।
श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी -प्रसादसिद्धिद्वारा
चिन्तितफलावाप्त्यर्थे जपे विनियोगः ।

॥ ध्यानम् ॥

सिन्दूरारुण विग्रहां(न्) त्रिनयनां(म्) माणिक्यमौलि स्फुरत्
तारा नायक शेखरां(म्) स्मितमुखी मापीन वक्षोरुहाम् ।
पाणिभ्यामलिपूर्ण रत्न चषकं(म्) रक्तोत्पलं(म्) बिभ्रतीं(म्)
सौम्यां(म्) रत्न घटस्थ रक्तचरणां(न्) ध्यायेत् परामम्बिकाम् ॥ 1 ॥

अरुणां(ङ्) करुणा तरङ्गि-ताक्षीं(न्)
धृत पाशाङ्कुश पुष्प बाणचापाम्।
अणिमादिभि रावृतां(म्) मयूखै –
रहमित्येव विभावये भवानीम् ॥2 ॥

ध्यायेत् पद्मासनस्थां(वँ) विकसितवदनां(म्) पद्मपत्रायताक्षीं
हेमाभां(म्) पीतवस्त्रां(ङ्) करकलितलसद्धेमपद्मां(वँ) वराङ्गीम्।
सर्वालङ्कार युक्तां(म्) सतत मभयदां(म्) भक्तनम्रां(म्) भवानीं

श्रीविद्यां(म्) शान्त मूर्तिं(म्) सकल सुरनुतां(म्) सर्व सम्पत्प्रदात्रीम् ॥3 ॥

सकुङ्कुम विलेपनामलिकचुम्बि कस्तूरिकां(म्)
समन्द हसितेक्षणां(म्) सशर चाप पाशाङ्कुशाम्
अशेषजन मोहिनीं(म्) अरुण माल्य भूषाम्बरां(ञ्)
जपाकुसुम भासुरां(ञ्) जपविधौ स्मरे दम्बिकाम् ॥ 4 ॥

॥ अथ श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रम् ॥

ॐ श्रीमाता श्रीमहाराज्ञी श्रीमत्-सिं(म्)हासनेश्वरी ।
चिदग्नि-कुण्ड-सम्भूता देवकार्य-समुद्यता ॥ 1॥

उद्यद्भानु-सहस्राभा चतुर्बाहु-समन्विता ।
रागस्वरूप-पाशाढ्या क्रोधाकाराङ्कुशोज्ज्वला ॥ 2॥

मनोरूपेक्षु-कोदण्डा पञ्चतन्मात्र-सायका ।
निजारुण-प्रभापूर-मज्जद्ब्रह्माण्ड-मण्डला ॥ 3॥

चम्पकाशोक-पुन्नाग-सौगन्धिक-लसत्कचा ।
कुरुविन्दमणि-श्रेणी-कनत्कोटीर-मण्डिता ॥ 4॥

अष्टमीचन्द्र-विभ्राज-दलिकस्थल-शोभिता ।
मुखचन्द्र-कलङ्काभ-मृगनाभि-विशेषका ॥ 5॥

वदनस्मर-माङ्गल्य-गृहतोरण-चिल्लिका ।

वक्त्रलक्ष्मी-परीवाह-चलन्मीनाभ-लोचना ॥ 6॥

नवचम्पक-पुष्पाभ-नासादण्ड-विराजिता ।
ताराकान्ति-तिरस्कारि-नासाभरण-भासुरा ॥ 7॥

कदम्बमञ्जरी-कॢप्त-कर्णपूर-मनोहरा ।
ताटङ्क-युगली-भूत-तपनोडुप-मण्डला ॥ 8॥

पद्मराग-शिलादर्श-परिभावि-कपोलभूः ।
नवविद्रुम-बिम्बश्री-न्यक्कारि-रदनच्छदा ॥ 9॥

शुद्ध-विद्याङ्कुराकार-द्विजपङ्क्ति-द्वयोज्ज्वला ।
कर्पूर-वीटिकामोद-समाकर्षि-दिगन्तरा ॥ 10॥

निज-सल्लाप-माधुर्य-विनिर्भर्त्सित-कच्छपी ।
मन्दस्मित-प्रभापूर-मज्जत्कामेश-मानसा ॥ 11॥

अनाकलित-सादृश्य-चिबुकश्री-विराजिता ।
कामेश-बद्ध-माङ्गल्य-सूत्र-शोभित-कन्धरा ॥ 12॥

कनकाङ्गद-केयूर-कमनीय-भुजान्विता ।
रत्नग्रैवेय-चिन्ताक-लोल-मुक्ता-फलान्विता ॥ 13॥

कामेश्वर-प्रेमरत्न-मणि-प्रतिपण-स्तनी ।

नाभ्यालवाल-रोमालि-लता-फल-कुचद्वयी ॥ 14॥

लक्ष्यरोम-लताधारता-समुन्नेय-मध्यमा ।
स्तनभार-दलन्मध्य-पट्टबन्ध-वलित्रया ॥ 15॥

अरुणारुण-कौसुम्भ-वस्त्र-भास्वत्-कटीतटी ।
रत्न-किङ्किणिका-रम्य-रशना-दाम-भूषिता ॥ 16॥

कामेश-ज्ञात-सौभाग्य-मार्दवोरु-द्वयान्विता ।
माणिक्य-मुकुटाकार-जानुद्वय-विराजिता ॥ 17॥

इन्द्रगोप-परिक्षिप्त-स्मरतूणाभ-जङ्घिका ।
गूढगुल्फा कूर्मपृष्ठ-जयिष्णु-प्रपदान्विता ॥ 18॥

नख-दीधिति-सं(ञ्)छन्न-नमज्जन-तमोगुणा ।
पदद्वय-प्रभाजाल-पराकृत-सरोरुहा ॥ 19॥

सिञ्जान-मणिमञ्जीर-मण्डित-श्री-पदाम्बुजा ।
मराली-मन्दगमना महालावण्य-शेवधिः ॥ 20॥

सर्वारुणाऽनवद्याङ्गी सर्वाभरण-भूषिता ।
शिव-कामेश्वराङ्कस्था शिवा स्वाधीन-वल्लभा ॥ 21॥

सुमेरु-मध्य-शृङ्गस्था श्रीमन्नगर-नायिका ।

चिन्तामणि-गृहान्तस्था पञ्च-ब्रह्मासन-स्थिता ॥ 22॥

महापद्माटवी-सं(म्) स्था कदम्बवन-वासिनी ।
सुधासागर-मध्यस्था कामाक्षी कामदायिनी ॥ 23॥

देवर्षि-गण-सं(ङ्)घात-स्तूयमानात्म-वैभवा ।
भण्डासुर-वधोद्युक्त-शक्तिसेना-समन्विता ॥ 24॥

सम्पत्करी-समारूढ-सिन्धुर-व्रज-सेविता ।
अश्वारूढाधिष्ठिताश्व-कोटि-कोटिभिरावृता ॥ 25॥

चक्रराज-रथारूढ-सर्वायुध-परिष्कृता ।
गेयचक्र-रथारूढ-मन्त्रिणी-परिसेविता ॥ 26॥

किरिचक्र-रथारूढ-दण्डनाथा-पुरस्कृता ।
ज्वाला-मालिनिकाक्षिप्त-वह्निप्राकार-मध्यगा ॥ 27॥

भण्डसैन्य-वधोद्युक्त-शक्ति-विक्रम-हर्षिता ।
नित्या-पराक्रमाटोप-निरीक्षण-समुत्सुका ॥ 28॥

भण्डपुत्र-वधोद्युक्त-बाला-विक्रम-नन्दिता ।
मन्त्रिण्यम्बा-विरचित-विषङ्ग-वध-तोषिता ॥ 29॥

विशुक्र-प्राणहरण-वाराही-वीर्य-नन्दिता ।

कामेश्वर-मुखालोक-कल्पित-श्रीगणेश्वरा ॥ 30॥

महागणेश-निर्भिन्न-विघ्नयन्त्र-प्रहर्षिता ।
भण्डासुरेन्द्र-निर्मुक्त-शस्त्र-प्रत्यस्त्र-वर्षिणी ॥ 31॥

कराङ्गुलि-नखोत्पन्न-नारायण-दशाकृतिः ।
महा-पाशुपतास्त्राग्नि-निर्दग्धासुर-सैनिका ॥ 32॥

कामेश्वरास्त्र-निर्दग्ध-सभण्डासुर-शून्यका ।
ब्रह्मोपेन्द्र-महेन्द्रादि-देव-सं(म्) स्तुत-वैभवा ॥ 33॥

हर-नेत्राग्नि-सं(न्)दग्ध-काम-सञ्जीवनौषधिः ।
श्रीमद्वाग्भव-कूटैक-स्वरूप-मुख-पङ्कजा ॥ 34॥

कण्ठाधः(ख्)-कटि-पर्यन्त-मध्यकूट-स्वरूपिणी ।
शक्ति-कूटैकतापन्न-कट्यधोभाग-धारिणी ॥ 35॥

मूल-मन्त्रात्मिका मूलकूटत्रय-कलेबरा ।
कुलामृतैक-रसिका कुलसं(ङ्)केत-पालिनी ॥ 36॥

कुलाङ्गना कुलान्तस्था कौलिनी कुलयोगिनी ।
अकुला समयान्तस्था समयाचार-तत्परा ॥ 37॥

मूलाधारैक-निलया ब्रह्मग्रन्थि-विभेदिनी ।

मणि-पूरान्तरुदिता विष्णुग्रन्थि-विभेदिनी ॥ 38॥

आज्ञा-चक्रान्तरालस्था रुद्रग्रन्थि-विभेदिनी ।
सहस्राराम्बुजारूढा सुधा-साराभिवर्षिणी ॥ 39॥

तडिल्लता-समरुचिः(ष्) षट्चक्रोपरि-सं(म्)स्थिता ।
महासक्तिः(ख्) कुण्डलिनी बिसतन्तु-तनीयसी ॥ 40॥

भवानी भावनागम्या भवारण्य-कुठारिका ।
भद्रप्रिया भद्रमूर्तिर् भक्त-सौभाग्यदायिनी ॥ 41॥

भक्तिप्रिया भक्तिगम्या भक्तिवश्या भयापहा ।
शाम्भवी शारदाराध्या शर्वाणी शर्मदायिनी ॥ 42॥

शाङ्करी श्रीकरी साध्वी शरच्चन्द्र-निभानना ।
शातोदरी शान्तिमती निराधारा निरञ्जना ॥ 43॥

निर्लेपा निर्मला नित्या निराकारा निराकुला ।
निर्गुणा निष्कला शान्ता निष्कामा निरुपप्लवा ॥ 44॥

नित्यमुक्ता निर्विकारा निष्प्रपञ्चा निराश्रया ।
नित्यशुद्धा नित्यबुद्धा निरवद्या निरन्तरा ॥ 45॥

निष्कारणा निष्कलङ्का निरुपाधिर् निरीश्वरा ।

नीरागा रागमथनी निर्मदा मदनाशिनी ॥ 46॥

निश्चिन्ता निरहं(ङ्)कारा निर्मोहा मोहनाशिनी ।
निर्ममा ममताहन्त्री निष्पापा पापनाशिनी ॥ 47॥

निष्क्रोधा क्रोधशमनी निर्लोभा लोभनाशिनी ।
निः(स्) सं(म्)शया सं (म्)शयघ्नी निर्भवा भवनाशिनी ॥ 48॥

निर्विकल्पा निराबाधा निर्भेदा भेदनाशिनी ।
निर्नाशा मृत्युमथनी निष्क्रिया निष्परिग्रहा ॥ 49॥

निस्तुला नीलचिकुरा निरपाया निरत्यया ।
दुर्लभा दुर्गमा दुर्गा दुःखहन्त्री सुखप्रदा ॥ 50॥

दुष्टदूरा दुराचार-शमनी दोषवर्जिता ।
सर्वज्ञा सान्द्रकरुणा समानाधिक-वर्जिता ॥ 51॥

सर्वशक्तिमयी सर्व-मङ्गला सद्गतिप्रदा ।
सर्वेश्वरी सर्वमयी सर्वमन्त्र-स्वरूपिणी ॥ 52॥

सर्व-यन्त्रात्मिका सर्व-तन्त्ररूपा मनोन्मनी ।
माहेश्वरी महादेवी महालक्ष्मीर् मृडप्रिया ॥ 53॥

महारूपा महापूज्या महापातक-नाशिनी ।

महामाया महासत्त्वा महाशक्तिर् महारतिः ॥ 54॥

महाभोगा महैश्वर्या महावीर्या महाबला ।
महाबुद्धिर् महासिद्धिर् महायोगेश्वरेश्वरी ॥ 55॥

महातन्त्रा महामन्त्रा महायन्त्रा महासना ।
महायाग-क्रमाराध्या महाभैरव-पूजिता ॥ 56॥

महेश्वर-महाकल्प-महाताण्डव-साक्षिणी ।
महाकामेश-महिषी महात्रिपुर-सुन्दरी ॥ 57॥

चतुः(ष्)षष्ट्युपचाराढ्या चतुः(ष्)षष्टिकलामयी ।
महाचतुः(ष्)-षष्टिकोटि-योगिनी-गणसेविता ॥ 58॥

मनुविद्या चन्द्रविद्या चन्द्रमण्डल-मध्यगा ।
चारुरूपा चारुहासा चारुचन्द्र-कलाधरा ॥ 59॥

चराचर-जगन्नाथा चक्रराज-निकेतना ।
पार्वती पद्मनयना पद्मराग-समप्रभा ॥ 60॥

पञ्च-प्रेतासनासीना पञ्चब्रह्म-स्वरूपिणी ।
चिन्मयी परमानन्दा विज्ञान-घनरूपिणी ॥ 61॥

ध्यान-ध्यातृ-ध्येयरूपा धर्माधर्म-विवर्जिता ।

विश्वरूपा जागरिणी स्वपन्ती तैजसात्मिका ॥ 62॥

सुप्ता प्राज्ञात्मिका तुर्या सर्वावस्था-विवर्जिता ।
सृष्टिकर्त्री ब्रह्मरूपा गोप्त्री गोविन्दरूपिणी ॥ 63॥

सं(म्)हारिणी रुद्ररूपा तिरोधान-करीश्वरी ।
सदाशिवाऽनुग्रहदा पञ्चकृत्य-परायणा ॥ 64॥

भानुमण्डल-मध्यस्था भैरवी भगमालिनी ।
पद्मासना भगवती पद्मनाभ-सहोदरी ॥ 65॥

उन्मेष-निमिषोत्पन्न-विपन्न-भुवनावली ।
सहस्र-शीर्षवदना सहस्राक्षी सहस्रपात् ॥ 66॥

आब्रह्म-कीट-जननी वर्णाश्रम-विधायिनी ।
निजाज्ञारूप-निगमा पुण्यापुण्य-फलप्रदा ॥ 67॥

श्रुति-सीमन्त-सिन्दूरी-कृत-पादाब्ज-धूलिका ।
सकलागम-सन्दोह-शुक्ति-सम्पुट-मौक्तिका ॥ 68॥

पुरुषार्थप्रदा पूर्णा भोगिनी भुवनेश्वरी ।
अम्बिकाऽनादि-निधना हरिब्रह्मेन्द्र-सेविता ॥ 69॥

नारायणी नादरूपा नामरूप-विवर्जिता ।

ह्रीं(ङ्)कारी ह्रीमती हृद्या हेयोपादेय-वर्जिता ॥ 70॥

राजराजार्चिता राज्ञी रम्या राजीवलोचना ।
रञ्जनी रमणी रस्या रणत्किङ्किणि-मेखला ॥ 71॥

रमा राकेन्दुवदना रतिरूपा रतिप्रिया ।
रक्षाकरी राक्षसघ्नी रामा रमणलम्पटा ॥ 72॥

काम्या कामकलारूपा कदम्ब-कुसुम-प्रिया ।
कल्याणी जगतीकन्दा करुणा-रस-सागरा ॥ 73॥

कलावती कलालापा कान्ता कादम्बरीप्रिया ।
वरदा वामनयना वारुणी-मद-विह्वला ॥ 74॥

विश्वाधिका वेदवेद्या विन्ध्याचल-निवासिनी ।
विधात्री वेदजननी विष्णुमाया विलासिनी ॥ 75॥

क्षेत्रस्वरूपा क्षेत्रेशी क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ-पालिनी ।
क्षयवृद्धि-विनिर्मुक्ता क्षेत्रपाल-समर्चिता ॥ 76॥

विजया विमला वन्द्या वन्दारु-जन-वत्सला ।
वाग्वादिनी वामकेशी वह्निमण्डल-वासिनी ॥ 77॥

भक्तिमत्-कल्पलतिका पशुपाश-विमोचिनी ।

सं(म्)हृताशेष-पाषण्डा सदाचार-प्रवर्तिका ॥ 78॥

तापत्रयाग्नि-सन्तप्त-समाह्लादन-चन्द्रिका ।
तरुणी तापसाराध्या तनुमध्या तमोऽपहा ॥ 79॥

चितिस्तत्पद-लक्ष्यार्था चिदेकरस-रूपिणी ।
स्वात्मानन्द-लवीभूत-ब्रह्माद्यानन्द-सन्ततिः ॥ 80॥

परा प्रत्यक्चितीरूपा पश्यन्ती परदेवता ।
मध्यमा वैखरीरूपा भक्त-मानस-हं(म्)सिका ॥ 81॥

कामेश्वर-प्राणनाडी कृतज्ञा कामपूजिता ।
शृङ्गार-रस-सम्पूर्णा जया जालन्धर-स्थिता ॥ 82॥

ओड्याणपीठ-निलया बिन्दु-मण्डलवासिनी ।
रहोयाग-क्रमाराध्या रहस्तर्पण-तर्पिता ॥ 83॥

सद्यः(फ्) प्रसादिनी विश्व-साक्षिणी साक्षिवर्जिता ।
षडङ्गदेवता-युक्ता षाड्गुण्य-परिपूरिता ॥ 84॥

नित्यक्लिन्ना निरुपमा निर्वाण-सुख-दायिनी ।
नित्या-षोडशिका-रूपा श्रीकण्ठार्ध-शरीरिणी ॥ 85॥

प्रभावती प्रभारूपा प्रसिद्धा परमेश्वरी ।

मूलप्रकृतिर् अव्यक्ता व्यक्ताव्यक्त-स्वरूपिणी ॥ 86॥

व्यापिनी विविधाकारा विद्याविद्या-स्वरूपिणी ।
महाकामेश-नयन-कुमुदाह्लाद-कौमुदी ॥ 87॥

भक्त-हार्द-तमोभेद-भानुमद्भानु-सन्ततिः ।
शिवदूती शिवाराध्या शिवमूर्तिः(श्) शिवङ्करी ॥ 88॥

शिवप्रिया शिवपरा शिष्टेष्टा शिष्टपूजिता ।
अप्रमेया स्वप्रकाशा मनोवाचामगोचरा ॥ 89॥

चिच्छक्तिश् चेतनारूपा जडशक्तिर् जडात्मिका ।
गायत्री व्याहृतिः(स्) सन्ध्या द्विजबृन्द-निषेविता ॥ 90॥

तत्त्वासना तत्त्वमयी पञ्च-कोशान्तर-स्थिता ।
निः(स्)सीम-महिमा नित्य-यौवना मदशालिनी ॥ 91॥

मदघूर्णित-रक्ताक्षी मदपाटल-गण्डभूः ।
चन्दन-द्रव-दिग्धाङ्गी चाम्पेय-कुसुम-प्रिया ॥ 92॥

कुशला कोमलाकारा कुरुकुल्ला कुलेश्वरी ।
कुलकुण्डालया कौल-मार्ग-तत्पर-सेविता ॥ 93॥

कुमार-गणनाथाम्बा तुष्टिः(फ्) पुष्टिर् मतिर् धृतिः ।

शान्तिः(स्) स्वस्तिमती कान्तिर् नन्दिनी विघ्ननाशिनी ॥ 94॥

तेजोवती त्रिनयना लोलाक्षी-कामरूपिणी ।
मालिनी हं(म्) सिनी माता मलयाचल-वासिनी ॥ 95॥

सुमुखी नलिनी सुभ्रूः(श्) शोभना सुरनायिका ।
कालकण्ठी कान्तिमती क्षोभिणी सूक्ष्मरूपिणी ॥ 96॥

वज्रेश्वरी वामदेवी वयोऽवस्था-विवर्जिता ।
सिद्धेश्वरी सिद्धविद्या सिद्धमाता यशस्विनी ॥ 97॥

विशुद्धिचक्र-निलयाऽऽरक्तवर्णा त्रिलोचना ।
खट्वाङ्गादि-प्रहरणा वदनैक-समन्विता ॥ 98॥

पायसान्नप्रिया त्वक्स्था पशुलोक-भयङ्करी ।
अमृतादि-महाशक्ति-सं(म्)वृता डाकिनीश्वरी ॥ 99॥

अनाहताब्ज-निलया श्यामाभा वदनद्वया ।
दं(म्)ष्ट्रोज्ज्वलाऽक्ष-मालादि-धरा रुधिरसं(म्)स्थिता ॥ 100॥

कालरात्र्यादि-शक्त्यौघ-वृता स्निग्धौदनप्रिया ।
महावीरेन्द्र-वरदा राकिण्यम्बा-स्वरूपिणी ॥ 101॥

मणिपूराब्ज-निलया वदनत्रय-सं(यँ)युता ।

वज्रादिकायुधोपेता डामर्यादिभिरावृता ॥ 102॥

रक्तवर्णा मां(म्)सनिष्ठा गुडान्न-प्रीत-मानसा ।
समस्तभक्त-सुखदा लाकिन्यम्बा-स्वरूपिणी ॥ 103॥

स्वाधिष्ठानाम्बुज-गता चतुर्वक्त्र-मनोहरा ।
शूलाद्यायुध-सम्पन्ना पीतवर्णाऽतिगर्विता ॥ 104॥

मेदोनिष्ठा मधुप्रीता बन्धिन्यादि-समन्विता ।
दध्यन्नासक्त-हृदया काकिनी-रूप-धारिणी ॥ 105॥

मूलाधाराम्बुजारूढा पञ्च-वक्त्राऽस्थि-सं(म्)स्थिता ।
अङ्कुशादि-प्रहरणा वरदादि-निषेविता ॥ 106॥

मुद्गौदनासक्त-चित्ता साकिन्यम्बा-स्वरूपिणी ।
आज्ञा-चक्राब्ज-निलया शुक्लवर्णा षडानना ॥ 107॥

मज्जासं(म्)स्था हं(म्)सवती-मुख्य-शक्ति-समन्विता ।
हरिद्रान्नैक-रसिका हाकिनी-रूप-धारिणी ॥ 108॥

सहस्रदल-पद्मस्था सर्व-वर्णोप-शोभिता ।
सर्वायुधधरा शुक्ल-सं(म्)स्थिता सर्वतोमुखी ॥ 109॥

सर्वौदन-प्रीतचित्ता याकिन्यम्बा-स्वरूपिणी ।

स्वाहा स्वधाऽमतिर् मेधा श्रुतिः(स्) स्मृतिर् अनुत्तमा ॥ 110॥

पुण्यकीर्तिः(ख्) पुण्यलभ्या पुण्यश्रवण-कीर्तना ।
पुलोमजार्चिता बन्ध-मोचनी बन्धुरालका ॥ 111॥

विमर्शरूपिणी विद्या वियदादि-जगत्प्रसूः ।
सर्वव्याधि-प्रशमनी सर्वमृत्यु-निवारिणी ॥ 112॥

अग्रगण्याऽचिन्त्यरूपा कलिकल्मष-नाशिनी ।
कात्यायनी कालहन्त्री कमलाक्ष-निषेविता ॥ 113॥

ताम्बूल-पूरित-मुखी दाडिमी-कुसुम-प्रभा ।
मृगाक्षी मोहिनी मुख्या मृडानी मित्ररूपिणी ॥ 114॥

नित्यतृप्ता भक्तनिधिर् नियन्त्री निखिलेश्वरी ।
मैत्र्यादि-वासनालभ्या महाप्रलय-साक्षिणी ॥ 115॥

परा शक्तिः(फ्) परा निष्ठा प्रज्ञानघन-रूपिणी ।
माध्वीपानालसा मत्ता मातृका-वर्ण-रूपिणी ॥ 116॥

महाकैलास-निलया मृणाल-मृदु-दोर्लता ।
महनीया दयामूर्तिर् महासाम्राज्य-शालिनी ॥ 117॥

आत्मविद्या महाविद्या श्रीविद्या कामसेविता ।

श्री-षोडशाक्षरी-विद्या त्रिकूटा कामकोटिका ॥ 118॥

कटाक्ष-किङ्करी-भूत-कमला-कोटि-सेविता ।
शिरः(स्) स्थिता चन्द्रनिभा भालस्थेन्द्र-धनुः(फ्) प्रभा ॥ 119॥

हृदयस्था रविप्रख्या त्रिकोणान्तर-दीपिका ।
दाक्षायणी दैत्यहन्त्री दक्षयज्ञ-विनाशिनी ॥ 120॥

दरान्दोलित-दीर्घाक्षी दर-हासोज्ज्वलन्-मुखी ।
गुरुमूर्तिर् गुणनिधिर् गोमाता गुहजन्मभूः ॥ 121॥

देवेशी दण्डनीतिस्था दहराकाश-रूपिणी ।
प्रतिपन्मुख्य-राकान्त-तिथि-मण्डल-पूजिता ॥ 122॥

कलात्मिका कलानाथा काव्यालाप-विनोदिनी ।
सचामर-रमा-वाणी-सव्य-दक्षिण-सेविता ॥ 123॥

आदिशक्तिर् अमेयाऽऽत्मा परमा पावनाकृतिः ।
अनेककोटि-ब्रह्माण्ड-जननी दिव्यविग्रहा ॥ 124॥

क्लीं(ङ्)कारी केवला गुह्या कैवल्य-पददायिनी ।
त्रिपुरा त्रिजगद्वन्द्या त्रिमूर्तिस् त्रिदशेश्वरी ॥ 125॥

त्र्यक्षरी दिव्य-गन्धाढ्या सिन्दूर-तिलकाञ्चिता ।

उमा शैलेन्द्रतनया गौरी गन्धर्व-सेविता ॥ 126॥

विश्वगर्भा स्वर्णगर्भाऽवरदा वागधीश्वरी ।
ध्यानगम्याऽपरिच्छेद्या ज्ञानदा ज्ञानविग्रहा ॥ 127॥

सर्ववेदान्त-सं(म्)वेद्या सत्यानन्द-स्वरूपिणी ।
लोपामुद्रार्चिता लीला-कॢप्त-ब्रह्माण्ड-मण्डला ॥ 128॥

अदृश्या दृश्यरहिता विज्ञात्री वेद्यवर्जिता ।
योगिनी योगदा योग्या योगानन्दा युगन्धरा ॥ 129॥

इच्छाशक्ति-ज्ञानशक्ति-क्रियाशक्ति-स्वरूपिणी ।
सर्वाधारा सुप्रतिष्ठा सदसद्रूप-धारिणी ॥ 130॥

अष्टमूर्तिर् अजाजैत्री लोकयात्रा-विधायिनी ।
एकाकिनी भूमरूपा निर्द्वैता द्वैतवर्जिता ॥ 131॥

अन्नदा वसुदा वृद्धा ब्रह्मात्मैक्य-स्वरूपिणी ।
बृहती ब्राह्मणी ब्राह्मी ब्रह्मानन्दा बलिप्रिया ॥ 132॥

भाषारूपा बृहत्सेना भावाभाव-विवर्जिता ।
सुखाराध्या शुभकरी शोभना सुलभा गतिः ॥ 133॥

राज-राजेश्वरी राज्य-दायिनी राज्य-वल्लभा ।

राजत्कृपा राजपीठ-निवेशित-निजाश्रिता ॥ 134॥

राज्यलक्ष्मीः(ख्) कोशनाथा चतुरङ्ग-बलेश्वरी ।
साम्राज्य-दायिनी सत्यसन्धा सागरमेखला ॥ 135॥

दीक्षिता दैत्यशमनी सर्वलोक-वशङ्करी ।
सर्वार्थदात्री सावित्री सच्चिदानन्द-रूपिणी ॥ 136॥

देश-कालापरिच्छिन्ना सर्वगा सर्वमोहिनी ।
सरस्वती शास्त्रमयी गुहाम्बा गुह्यरूपिणी ॥ 137॥

सर्वोपाधि-विनिर्मुक्ता सदाशिव-पतिव्रता ।
सम्प्रदायेश्वरी साध्वी गुरुमण्डल-रूपिणी ॥ 138॥

कुलोत्तीर्णा भगाराध्या माया मधुमती मही ।
गणाम्बा गुह्यकाराध्या कोमलाङ्गी गुरुप्रिया ॥ 139॥

स्वतन्त्रा सर्वतन्त्रेशी दक्षिणामूर्ति-रूपिणी ।
सनकादि-समाराध्या शिवज्ञान-प्रदायिनी ॥ 140॥

चित्कलाऽऽनन्द-कलिका प्रेमरूपा प्रियङ्करी ।
नामपारायण-प्रीता नन्दिविद्या नटेश्वरी ॥ 141॥

मिथ्या-जगदधिष्ठाना मुक्तिदा मुक्तिरूपिणी ।

लास्यप्रिया लयकरी लज्जा रम्भादिवन्दिता ॥ 142॥

भवदाव-सुधावृष्टिः(फ्) पापारण्य-दवानला ।
दौर्भाग्य-तूलवातूला जराध्वान्त-रविप्रभा ॥ 143॥

भाग्याब्धि-चन्द्रिका भक्त-चित्तकेकि-घनाघना ।
रोगपर्वत-दम्भोलिर् मृत्युदारु-कुठारिका ॥ 144॥

महेश्वरी महाकाली महाग्रासा महाशना ।
अपर्णा चण्डिका चण्डमुण्डासुर-निषूदिनी ॥ 145॥

क्षराक्षरात्मिका सर्व-लोकेशी विश्वधारिणी ।
त्रिवर्गदात्री सुभगा त्र्यम्बका त्रिगुणात्मिका ॥ 146॥

स्वर्गापवर्गदा शुद्धा जपापुष्प-निभाकृतिः ।
ओजोवती द्युतिधरा यज्ञरूपा प्रियव्रता ॥ 147॥

दुराराध्या दुराधर्षा पाटली-कुसुम-प्रिया ।
महती मेरुनिलया मन्दार-कुसुम-प्रिया ॥ 148॥

वीराराध्या विराड्रूपा विरजा विश्वतोमुखी ।
प्रत्यग्रूपा पराकाशा प्राणदा प्राणरूपिणी ॥ 149॥

मार्ताण्ड-भैरवाराध्या मन्त्रिणीन्यस्त-राज्यधूः ।

त्रिपुरेशी जयत्सेना निस्त्रैगुण्या परापरा ॥ 150॥

सत्य-ज्ञानानन्द-रूपा सामरस्य-परायणा ।
कपर्दिनी कलामाला कामधुक् कामरूपिणी ॥ 151॥

कलानिधिः(ख्) काव्यकला रसज्ञा रसशेवधिः ।
पुष्टा पुरातना पूज्या पुष्करा पुष्करेक्षणा ॥ 152॥

परं(ञ्)ज्योतिः(फ्) परं(न्)धाम परमाणुः(फ्) परात्परा ।
पाशहस्ता पाशहन्त्री परमन्त्र-विभेदिनी ॥ 153॥

मूर्ताऽमूर्ताऽनित्यतृप्ता मुनिमानस-हं(म्)सिका ।
सत्यव्रता सत्यरूपा सर्वान्तर्यामिनी सती ॥ 154॥

ब्रह्माणी ब्रह्मजननी बहुरूपा बुधार्चिता ।
प्रसवित्री प्रचण्डाऽऽज्ञा प्रतिष्ठा प्रकटाकृतिः ॥ 155॥

प्राणेश्वरी प्राणदात्री पञ्चाशत्पीठ-रूपिणी ।
विशृङ्खला विविक्तस्था वीरमाता वियत्प्रसूः ॥ 156॥

मुकुन्दा मुक्तिनिलया मूलविग्रह-रूपिणी ।
भावज्ञा भवरोगघ्नी भवचक्र-प्रवर्तिनी ॥ 157॥

छन्दः(स्) सारा शास्त्रसारा मन्त्रसारा तलोदरी ।

उदारकीर्तिर् उद्दामवैभवा वर्णरूपिणी ॥ 158॥

जन्ममृत्यु-जरातप्त-जनविश्रान्ति-दायिनी ।
सर्वोपनिष-दुद्-घुष्टा शान्त्यतीत-कलात्मिका ॥159॥

गम्भीरा गगनान्तस्था गर्विता गानलोलुपा ।
कल्पना-रहिता काष्ठाऽकान्ता कान्तार्ध-विग्रहा ॥ 160॥

कार्यकारण-निर्मुक्ता कामकेलि-तरङ्गिता ।
कनत्कनकता-टङ्का लीला-विग्रह-धारिणी ॥ 161॥

अजा क्षयविनिर्मुक्ता मुग्धा क्षिप्र-प्रसादिनी ।
अन्तर्मुख-समाराध्या बहिर्मुख-सुदुर्लभा ॥ 162॥

त्रयी त्रिवर्गनिलया त्रिस्था त्रिपुरमालिनी ।
निरामया निरालम्बा स्वात्मारामा सुधासृतिः ॥163॥

सं(म्)सारपङ्क-निर्मग्न-समुद्धरण-पण्डिता ।
यज्ञप्रिया यज्ञकर्त्री यजमान-स्वरूपिणी ॥ 164॥

धर्माधारा धनाध्यक्षा धनधान्य-विवर्धिनी ।
विप्रप्रिया विप्ररूपा विश्वभ्रमण-कारिणी ॥ 165॥

विश्वग्रासा विद्रुमाभा वैष्णवी विष्णुरूपिणी ।

अयोनिर् योनिनिलया कूटस्था कुलरूपिणी ॥166॥

वीरगोष्ठीप्रिया वीरा नैष्कर्म्या नादरूपिणी ।
विज्ञानकलना कल्या विदग्धा बैन्दवासना ॥ 167॥

तत्त्वाधिका तत्त्वमयी तत्त्वमर्थ-स्वरूपिणी ।
सामगानप्रिया सौम्या सदाशिव-कुटुम्बिनी ॥ 168॥

सव्यापसव्य-मार्गस्था सर्वापद्विनिवारिणी ।
स्वस्था स्वभावमधुरा धीरा धीरसमर्चिता ॥ 169॥

चैतन्यार्घ्य-समाराध्या चैतन्य-कुसुमप्रिया ।
सदोदिता सदातुष्टा तरुणादित्य-पाटला ॥ 170॥

दक्षिणा-दक्षिणाराध्या दरस्मेर-मुखाम्बुजा ।
कौलिनी-केवलाऽनर्घ्य-कैवल्य-पददायिनी ॥171॥

स्तोत्रप्रिया स्तुतिमती श्रुति-सं(म्)स्तुत-वैभवा ।
मनस्विनी मानवती महेशी मङ्गलाकृतिः ॥ 172॥

विश्वमाता जगद्धात्री विशालाक्षी विरागिणी ।
प्रगल्भा परमोदारा परामोदा मनोमयी ॥ 173॥

व्योमकेशी विमानस्था वज्रिणी वामकेश्वरी ।

पञ्चयज्ञ-प्रिया पञ्च-प्रेत-मञ्चाधिशायिनी ॥ 174॥

पञ्चमी पञ्चभूतेशी पञ्च-सं(ङ्)ख्योपचारिणी ।
शाश्वती शाश्वतैश्वर्या शर्मदा शम्भुमोहिनी ॥ 175॥

धरा धरसुता धन्या धर्मिणी धर्मवर्धिनी ।
लोकातीता गुणातीता सर्वातीता शमात्मिका ॥ 176॥

बन्धूक-कुसुमप्रख्या बाला लीलाविनोदिनी ।
सुमङ्गली सुखकरी सुवेषाढ्या सुवासिनी ॥ 177॥

सुवासिन्यर्चन-प्रीताऽऽशोभना शुद्धमानसा ।
बिन्दु-तर्पण-सन्तुष्टा पूर्वजा त्रिपुराम्बिका ॥ 178॥

दशमुद्रा-समाराध्या त्रिपुराश्री-वशङ्करी ।
ज्ञानमुद्रा ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेय-स्वरूपिणी ॥ 179॥

योनिमुद्रा त्रिखण्डेशी त्रिगुणाम्बा त्रिकोणगा ।
अनघाऽद्भुत-चारित्रा वाञ्छितार्थ-प्रदायिनी ॥ 180॥

अभ्यासातिशय-ज्ञाता षडध्वातीत-रूपिणी ।
अव्याज-करुणा-मूर्तिर् अज्ञान-ध्वान्त-दीपिका ॥ 181॥

आबाल-गोप-विदिता सर्वानुल्लङ्घ्य-शासना ।

श्रीचक्रराज-निलया श्रीमत्-त्रिपुरसुन्दरी ॥ 182॥

श्रीशिवा शिव-शक्त्यैक्य-रूपिणी ललिताम्बिका ।
एवं(म्) श्रीललिता देव्या नाम्नां(म्) साहस्रकं(ञ्) जगुः ॥

॥ इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे उत्तरखण्डे श्रीहयग्रीवागस्त्यसं(वँ)वादे
श्रीललिता सहस्रनाम स्तोत्र कथनं(म्) सम्पूर्णम् ॥

क्षमा प्रार्थना

ॐ अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्या क्षमस्व परमेश्वरि।।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरी।।